CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भागवत स्तोत्र प्रकाशिका

(श्री नारायण कवच, गजेन्द्रमोक्ष और चतुःश्लोकी
भागवत-मूलपाठ, सरल परिचय, पाठविधि एवं अर्थ सहित)

आदित्य आनन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५.२

भागवत स्तोत्र प्रकाशिका

(श्री नारायण कवच, गजेन्द्रमोक्ष और चतुःश्लोकी भागवत-मूल, सरल परिचय, पाठविधि एवं अर्थ सहित)

आदित्य आनन्द

प्रज्ञा ट्रस्ट
शिवाला, वाराणसी (उ.प्र.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ISBN : 978-93-5279-736-3

प्रज्ञा ट्रस्ट
(प्रकाशक एवं वितरक)
शिवाला, वाराणसी (उ.प्र.)
www.pragyatrust.com
द्वारा प्रकाशित

मूल्यः रू.100.00

प्रथम संस्करणः 2017

© : आदित्य आनन्द

मुद्रकः सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

विषय-सूची

	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	ग्रन्थ परिचय	5
2.	नारायण कवच परिचय	17
3.	नारायण कवच पाठविधि	24
3.	नारायण कवच मूलपाठ	27
4.	गजेन्द्र मोक्ष परिचय	40
5.	गजेन्द्र मोक्ष मूलपाठ	47
6.	चतुःश्लोकी भागवत परिचय	60
7.	चतुःश्लोकी भागवत मूलपाठ	63

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

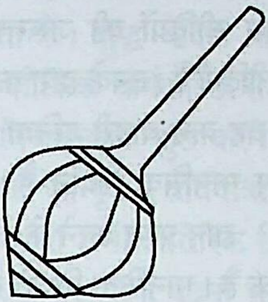

ॐ

ग्रंथ-परिचय

श्रीमद्भागवत अठारह महा पुराणोंमें एक पुराण है। सभी शास्त्रोंके रचनाकार भगवान् वेदव्यास माने जाते हैं, परन्तु कहते हैं कि अन्य सभी शास्त्रों की रचना करने के बाद भी उनको अपने आप में संतोष नहीं हुआ। अंतमें उन्होंने श्रीमद्भागवत पुराण की रचना की। इससे उनके मनको शांति प्राप्त हुई। इसीलिए भागवत को सभी शास्त्रों का चूड़ामणि माना जाता है। श्रीमद्भागवत में भगवान की दिव्य कथाएँ, आख्यायिकाएँ और कई स्तोत्र हैं। इस भागवत स्तोत्र प्रकाशिका में तीन स्तोत्र लिये गये हैं, जो भागवत में दिये गये अनेक दिव्य स्तोत्रोंमें मुख्य माने जाते हैं।

मन की अवस्था

इस पुस्तिका में श्रीमद्भागवत से तीन स्तोत्र लिये गये हैं। तीनों स्तोत्र वेदांत ज्ञान की तीन सीढ़ियाँ हैं। वेदों के अन्त या चरम ज्ञान को वेदान्त कहते हैं। वेदान्त में जीव, जगत और ईश्वर के तत्व का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान और उसकी अनुभूति के साधन का वर्णन है। जिस तरह किसी छत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियों की जरूरत होती है, उसी तरह तत्त्व ज्ञान की कुछ सीढ़ियाँ हैं। उनके द्वारा क्रमशः तत्त्व ज्ञान तक पहुँचा जा सकता है। यह क्रम बाहरी दुनिया की दूरी या समय का क्रम नहीं है। यह क्रम मानसिक स्थिति है। मानसिक स्थिति का तात्पर्य यह है कि तत्त्व ज्ञान प्राप्त करने के लिए मन को एक विशेष स्थिति में होना अवश्यक है। मानसिक स्थिति का क्या मतलब है इसे उदहारण से समझें।

माना कि दो लोगों के बीच में झगड़ा हो। किसी एक व्यक्ति को इस झगड़े में सही गलत का निर्णय करना है। जिस व्यक्ति को इसका निर्णय करना है, उसका एक पक्ष से लगाव है और एक पक्ष से दुश्मनी है। ऐसी स्थिति में वह निर्णयकर्ता सही फैसला नहीं कर पायेगा।

झगड़े का सही फैसला करने के लिए निर्णयकर्ता का मन निष्पक्ष होना चाहिए। मन की उस निष्पक्षता वाली अवस्था में ही सही फैसला हो सकता है। उसी तरह वेदान्त ज्ञान या तत्त्व ज्ञान को ठीक ठीक समझने के लिए मन को एक अवस्था विशेष में होना चाहिए। उस अवस्था विशेष में पहुँचे बिना सत्य को देखते सुनते हुए भी उसे स्वीकार और ग्रहण नहीं कर सकता।

मन की उस अवस्था विशेष में पहुँचाने के कुछ उपाय हैं। ये उपाय अनंत तरह के हो सकते हैं, परन्तु उन सभी उपायों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है :

1. कर्म या कर्मकाण्ड सभी सम्प्रदायों में कर्म या कर्मकाण्ड का विधान है। वैसे तो मूल रूप में वेदों में प्रतिपादित संध्या, अग्निहोत्र, तर्पण, आदि को कर्मकाण्ड कहा जाता है, परंतु व्यापक अर्थ में चित्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध करने के कारण वैदिक, पौराणिक और लौकिक नियत क्रियाओं को भी कर्म कहा जाता है। शुद्ध वैदिक कर्म दुर्लभ और अति शक्तिशाली हैं, परन्तु लौकिक कर्मकाण्ड से भी लाभ होता है। कर्मकाण्ड का मतलब नियमानुसार कुछ करने वाली क्रियाएं। जैसे संध्या, अग्निहोत्र, देवताओं का पूजन, तीर्थयात्रा, यज्ञ हवन आदि। इन नियमानुसार करने वाली सभी शारीरिक क्रियाओं को कर्मकांड कहा जाता है। स्तोत्रों का पाठ यानी पढ़ना भी कर्मकाण्ड ही है।

2. उपासना मूलतः मुख्य उपासनाएँ तो उपनिषदों में वर्णित शाण्डिल्य विद्या, दहर विद्या जैसी उपासनाएँ ही हैं परन्तु व्यापक अर्थ में चित्त को एकाग्र करने के साधन रूप से अन्य मानसिक क्रियाओं को भी उपासना कहा जा सकता है।

हरेक संप्रदाय में कुछ न कुछ मनके द्वारा करने का विधान है। इन विधानों में मन को एकाग्र करना, मन को शांत रखना और अमन करना, ध्यान के तरीके आदि हैं। इसके साथ साथ हरेक धर्म संप्रदाय में किसी न किसी देवी देवता या गुरुजी के प्रति श्रद्धा और भावनाओं का विधान है। ये सभी मानसिक क्रियाएँ हैं। इन मानसिक क्रियाओं और भावनाओं को उपासना कहा गया है। इन दोनों उपायों से मन तीसरी चीज ज्ञान के लिये तैयार होता है।

ये उपाय कैसे काम करते हैं, उदाहरण से समझें :

एक बाल्टी में पानी रखा है। कोई व्यक्ति उस बाल्टी के तल को देखना चाहता है। इसके लिए तीन शर्तें है।

प्रथम शर्त यह है कि पानी में गन्दगी न हो। दूसरी शर्त यह है कि पानी शांत हो। तीसरी और महत्वपूर्ण शर्त यह है कि कोई देखने वाला हो। बिना देखे कोई चीज दिखेगी ही नहीं।

उसी तरह तत्व रूपी तल को देखने के लिए तीन चीजें जरूरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। पहला मन से राग द्वेष आदि गन्दगी की सफाई, दूसरा मन की स्थिरता और तीसरा ज्ञान।

जिस उपाय से मन की गन्दगी की सफाई होती है वह है **कर्मकाण्ड**। मन को स्थिर करने का उपाय **उपासना** है। जिससे तत्त्व सत्य दिखे वह **ज्ञान** है। इन तीनों के प्रतिनिधि स्वरूप तीन स्तोत्र लिये गये हैं।

1. कर्मकाण्ड : नारायण कवच

जिस तरह बाल्टी का तल देखने के लिए पहली शर्त यह है कि पानी साफ होना चाहिए, उसी तरह तत्त्व ज्ञान के लिए पहली शर्त यह है कि मन शुद्ध हो। शुद्ध होना मतलब राग द्वेष भय क्रोध शोक आदि से मुक्त होना जरूरी है। अगर मन इन वेगों से अव्यवस्थित रहेगा तो वह ठीक ठीक काम नहीं कर पायेगा। सामान्य से सामान्य कार्य को करने के लिए भी मन को व्यवस्थित करना पड़ता है। फिर उस सूक्ष्म तत्त्व ज्ञान के लिए मन का राग द्वेष भय क्रोध शोक से मुक्त होना आवश्यक है। इस चित्त शुद्धि की प्रक्रिया का नाम कर्म है।

इस पुस्तिका में प्रथम स्तोत्र "नारायण कवच" है। यह मुख्यतः कर्म रूप है। कर्मकाण्ड का मतलब कुछ शारीरिक क्रियाओं से है। इस स्तोत्र में न्यास की विधियाँ और पाठ का विधान है, अतः इसे मुख्यतः कर्मकाण्ड रूप कहा जा सकता है। कर्मकाण्डों से मन शुद्ध कैसे होता है यह ठीक-ठीक समझना जरूरी है।

सभी कर्मकाण्ड दो तरह से होते हैं। सकाम और निष्काम। सकाम यानि कामनाओं इच्छाओं के साथ। निष्काम माने कामनाओं के बिना। विशेषतः निष्कामभाव से कर्म करने पर तीव्र गति से चित्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि होती है। शास्त्रों में इसे ही चित्त शुद्धि का मुख्य साधन कहा गया है।

निष्काम भाव का मतलब यह कि इस स्तोत्र का पाठ तो करें पर मन में कोई कामना न रखें। ऐसे में वही पाठ, न्यास रूपी क्रिया, मन को शुद्ध करने वाला हो जाता है। चुँकि मन की शुद्धि एक मानसिक परिवर्तन है, अतः यह कैसे होता है इसका ठीक ठीक अनुभव बिना निष्काम भाव से पाठ किये नहीं हो सकता। इसे ठीक ठीक अनुभव करने के लिए पाठ करना पड़ता है। पर बाहरी तौर पर समझने के लिए, मन जितनी देर पाठ में लगा रहता है उतनी देर तक उसे अपने आदतन लोभ क्रोध सुखास्वादन आदि के वेग को सहना पड़ता है। पाठ करने के लिए आलस्य का त्याग करना पड़ता है। पाठ करते समय क्रोध की स्थिति उत्पन्न होने पर भी चुप रहकर उस वेग को सहना पड़ता है। यह सब चित्तशुद्धि का मोटा मोटा उदाहरण है। अतः उत्तम पाठ वह है जो निष्काम भाव से किया गया हो।

परन्तु सकाम भाव से किया गया पाठ कर्म भी अनुपयुक्त नहीं है। यह समझना चाहिए कि किसी कामना की पूर्ति के लिए भी पाठ करना कोई बुरी बात नहीं है। चोरी, कालाबाजारी आदि निषिद्ध उपायों से इच्छित वस्तु प्राप्त करने से तो अच्छा है कि भगवान् से उसकी प्रार्थना की जाये। इस प्रकार से कामनाओं की पूर्ति के लिए भगवान की उपासना करने से "भगवान हैं" ऐसी बुद्धि मजबूत होती है, तथा "मैं ही सब कुछ कर लूँगा" ऐसा अहं भी नष्ट होता है। पाठ करते समय भगवान् की शक्तियों और गुण का स्मरण भी होता है। इस तरह से सकाम भाव से पाठ करने पर भी कुछ मात्रा में चित्त शुद्धि होती है। सकाम भाव से पाठ करने पर जिस कामना के लिए पाठ किये जाते है वह फल भी मिलता है। इस तरह से सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति भी होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2. उपासना : गजेन्द्र स्तुति

जिस तरह से बाल्टी का तल देखने के लिए सिर्फ पानी में गंदगी ही न हो बल्कि पानी शांत भी हो उसी तरह से सिर्फ मन का शुद्ध होना ही जरूरी नहीं वरन् शांत होना भी जरूरी है। मन में भले ही काम क्रोध आदिका वेग कम हो परन्तु एक विचार से दूसरे विचार, अनावश्यक चिंतन आदि करते रहने से मन कमजोर हो जाता है। अतः कुछ हद तक मन का स्थिर और एकाग्र होना भी जरूरी है। उसी एकाग्रता के लिए उपासनाओं की जरूरत है। उपासनाओं से मन शक्तिशाली होता है।

उपासना शब्द का मतलब है है उप यानी नजदीक और आसीन यानी बैठना। जिन उपायों और तरीकों से मन सत्य के नजदीक बैठता है, स्थिर होता है, वे सभी उपासनाएँ हैं। उपनिषदों में भी कई तरह की उपासनाओं का वर्णन है। जैसे समय समय पर विभिन्न साधकों द्वारा विभिन्न ध्यान पद्धतियों का विकास किया गया है। इन ध्यान पद्धतियों द्वारा मन की एकाग्रता बढ़ती है। अतः ये सभी उपासनाएँ है। सभी उपासनाएँ किसी न किसी प्रकार से मन को शांत और स्थिर करती हैं।

भागवत स्तोत्र प्रकाशिका का द्वितीय स्तोत्र गजेन्द्र मोक्ष है। यह मुख्यतः उपासनात्मक है। प्रायः यह देखा जाता है की जिस चीज पर आपका प्रेम होता है उस चीज पर आपका मन स्वयं स्थिर होने लगता है। उसी तरह से ईश्वर के प्रति भक्तिभावना भी उपासना ही है, क्योंकि प्रेम भक्ति से बढ़कर मन को स्थिर करनेवाली वस्तु कोई नहीं है।

प्रेम का होना कई बातों पर निर्भर करता है। उन कई बातों में उस व्यक्ति का गुण, रूप, अच्छाई, सामर्थ्य तो है ही पर सबसे ज्यादा जिस चीज पर यह निर्भर करता है वह है उस व्यक्ति का आपके प्रेम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के प्रत्युत्तर में प्रेम करना। जिस व्यक्ति से आप प्रेम करते हैं, वह भी आपके प्रेम के उत्तर में प्रेम करे तो आपका प्रेम और बढ़ जाता है।

गजेन्द्र मोक्ष में इसी तरह की प्रेमभक्ति का वर्णन है। इसमें गजेन्द्र की प्रेम भक्ति के फल का भी वर्णन है।

गजेन्द्र (हाथी) को ग्राह (घड़ियाल) पकड़ लेता है। वह निराकार निर्विशेष ईश्वर की स्तुति करता है। अब निराकार किस तरह प्रकट हो?

वह निराकार, 'कृपा करने के लिए जिस आकार में प्रकट होते हैं वह श्रीनारायण ही है। इस प्रकार इस स्तोत्र में भगवान् के अदभुत् गुण, रूप, अच्छाई, सामर्थ्य आदि का वर्णन तो है ही, साथ साथ प्रार्थना भक्ति करने पर वे उसका उत्तर देते हैं' ऐसा भी वर्णन है।

कर्मकाण्ड और उपासनाओं द्वारा तैयार "ग्रहणशील मन" के सामने जब सत्य तत्त्व सामने आता है तो उसे वह तत्काल और सही सही समझ में आ जाता है। अगर मन कर्मकाण्ड और उपासनाओं के द्वारा परिष्कृत नहीं है तो उसे या तो समझ में ही नहीं आता अथवा कुछ का कुछ समझ बैठता है। अतः कर्मकाण्ड (नियत शारीरिक क्रियाएँ) और उपासना (मानसिक क्रियाएँ और भक्ति भावनाओं) का बड़ा महत्व है। यह अनिवार्य है पर काफी नहीं है।

3. ज्ञान : चतुःश्लोकी भागवत

जैसे बाल्टी का जल शुद्ध हो और शांत भी हो तो भी बिना दृष्टि गये तल दिखेगा नहीं उसी तरह से तत्व ज्ञान के लिए समझ की भी आवश्यक है। कर्मकांडों के द्वारा मन शुद्ध हो गया हो यानी मन में काम क्रोध का वेग कम हो गया हो; उपासनाओं के द्वारा मन स्थिर और शक्तिशाली हो गया हो; परन्तु सिर्फ अच्छे और शक्तिशाली होने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से काम नहीं चलेगा। एक अच्छे और शक्तिशाली मन में सत्य का ज्ञान भी होना चाहिए। अतः अच्छे (शुद्ध) और शक्तिशाली (एकाग्र) मन का महत्त्व तभी है जब सत्य का ज्ञान प्रकट हो जाए। उसके लिए ज्ञान आवश्यक है।

इस पुस्तिका में वर्णित तीसरा स्तोत्र चतुःश्लोकी भागवत है। यह मूलतः ज्ञानात्मक है। इस तरह यह वेदांत ज्ञान की तीसरी सीढ़ी है। जिस तरह किसी छत पर चढते हैं तो अंतिम कदम जहाँ पड़ता है वह सीढ़ी भी है और छत भी। उसी तरह से ज्ञान, उपदेश रूप से होने के कारण सीढ़ी है और जब अनुभव में आ जाए तो वह अपने आप में फल है। कर्मकाण्ड से मन की सफाई और उपासनाओं से मन की स्थिरता और ज्ञान से उस अनंत फल की प्राप्ति होती है, जिससे जन्म-मरण से मुक्ति और इस जीवन में सुख-दुःख, मान-अपमान का प्रभाव नहीं पड़ता। इस स्तोत्र में आदिगुरु भगवान् नारायण ने ब्रह्माजी को तत्त्वज्ञान का उपदेश किया गया है।

पाठ कैसे करें

ये सभी स्तोत्र संस्कृत में हैं। जो लोग संस्कृत में पढ़ सकते हैं वे पढ़ें। जो नहीं पढ़ सकतें हैं वे भी पढ़ें। शुरू में थोड़ी बहुत गलतियाँ और अशुद्ध उच्चारण हो सकता है। उन अशुद्ध उच्चारणों से घबराना नहीं चाहिए। कई लोग यह मानते हैं कि अशुद्ध पढ़ने से कुछ अनिष्ट हो जायेगा। ऐसा मानना एकदम गलत है। ईश्वरीय व्यवस्था कोई तुनक मिजाजी व्यक्तित्व नहीं है जिसे तुरंत गुस्सा आ जाय। कतई नहीं पढ़ने से अच्छा है, गलत सही जैसे बन पड़े पढ़े। अगर प्रार्थना रूप से किया जाए तो सही गलत जैसा भी हो, ठीक है। सरल मन से विनीत होकर पढ़ने से कोई दोष नहीं है।

शुरू शुरू में पढ़ने में असुविधा होगी। जिसे नहीं पढ़ने आता वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गलत पढ़ते पढ़ते ही तो सही पढ़ पायेगा। धीरे धीरे उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो जायेगा। जहाँ पर उच्चारण कठिन हो वहाँ पर किसी से पूछ लेना चाहिए। इस तरह अभ्यास करने से ठीक ठीक पढ़ना आ जायेगा।

जो लोग बिल्कुल ही संस्कृत नहीं पढ़ सकते उनको क्या करना चाहिए? वैसे लोग हिंदी में दिए गए अर्थ को ही पढ़ें। मन लगाकर पढ़ने से मन में उन अर्थों का चिंतन होने लगता है। उससे भी लाभ मिलता है। कम से कम जितनी देर तक पाठ चलता है उतनी देर तक मन की शांति बनी रहती है। पाठ के बाद भी कुछ काल तक मन की उस शांति की स्थिरता बनी रहती है। जो मूल संस्कृत में नहीं पढ़ सकते हैं वे हिंदी में दिए गए अर्थ को भी पढ़ सकते हैं, उसका भी अपना लाभ है।

इन सभी उपरोक्त फलों के अलावा इन स्तोत्रों का सामान्य पाठ भी उत्तम है। कोई अर्थ समझ कर पढ़े तो उत्तम है, परन्तु बिना अर्थ समझे भी पाठ करे तो भी अच्छा है। इनका पाठ एवं चिंतन करने से पुण्यफल होता है जिससे सुख, समृद्धि, शांति होती है। कुछ समय तक पाठ करने वाले को यह अनुभव स्वयं ही होने लगता है कि जीवन व्यवस्थित होने लगा है। यह तो इन स्तोत्रों का सांसारिक फल है, जो तत्काल पता चलता है।

कोई निष्काम भाव से गुरु मुख से सुनकर अर्थ समझने का प्रयास करे तो फिर तत्त्व ज्ञान तक प्राप्त किया जा सकता है।

इस "भागवत स्तोत्र प्रकाशिका" में भागवत के अनेक दिव्य स्तोत्रों में से तीन मुख्य स्तोत्र लिये गये हैं। यह पुस्तिका भागवत के तीनों स्तोत्रों के माध्यम से एक तरह से पूरे भागवत की ज्ञान पद्धति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और विषय पर प्रकाश डालती है। पुस्तिका का दूसरा उद्देश्य यह है कि हम वेदांत ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया (तरीका) से परिचित हो जाएँ। इस पुस्तिका से लोगों में श्रीमद्भागवत आदि ग्रंथों में और वेदान्त विषय में रुचि और इस सनातन ज्ञान परंपरा के प्रति श्रद्धा भाव जगे। श्रद्धा जगने से वे इससे जुड़ें और अपना सब तरह से कल्याण कर सकें, यही कामना और प्रार्थना है। इसके साथ साथ सांसारिक कामनाओं की पूर्ति और कष्टों से निकलना पाठ और प्रार्थना के द्वारा कैसे किया जा सकता है इसका भी प्रत्यक्ष अनुभव इन स्तोत्रों का पाठ करके स्वयं ही किया जा सकता है। मनुष्य जिस जगह पर खड़ा है उसी जगह से आगे बढ़ता है। सभी लोग सिर्फ ईश्वर को ही चाहते हों यह जरूरी नहीं परन्तु लौकिक और पारलौकिक आपत्तियों का निवारण और श्रीसम्पत्ति की प्राप्ति का उपाय भी ऐसा ही हो कि वह भगवान् की ओर ले जाये।

इससे इन ग्रन्थों और सनातन धर्म के कल्याण करने की सामर्थ्य के प्रति भी श्रद्धा जगती है। सभी का सब तरह से कल्याण हो और सनातन ज्ञान परंपरा से अधिक से अधिक लोग अपना भला कर लें, यही आदिगुरु नारायण के समक्ष निवेदन है।

इति शम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

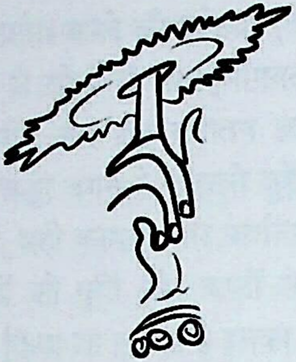

"यदा ही भगवानेव वस्तुतः सदासच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः।।"

नारायण कवच- 31

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत् है, वह वास्तव में भगवान् ही हैं इस सत्य के प्रभाव से हमारे सभी उपद्रव नष्ट हो जाएँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

नारायण कवच परिचय

इंद्र को त्रिलोकी का ऐश्वर्य पाकर घमंड हो गया। इस घमण्ड के कारण वें धर्ममर्यादा और सदाचार का उल्लंघन करने लगे थे। एक दिन की बात है, वे भरी सभा में अपनी पत्नी शचि के साथ ऊँचे सिंहासन पर बैठे हुए थे। सभी देवता, सिद्ध, गन्धर्व आदि चारों तरफ से उन्हें घेरे हुए थे। चँवर, पंखे आदि महाराजोचित सामग्रियाँ यथास्थान सुसज्जित थी। इसी समय देवराज इंद्र और समस्त देवताओं के परम आचार्य बृहस्पतिजी वहाँ आये। उन्हें सुर असुर सभी नमस्कार प्रणाम करते हैं। इंद्र ने देख लिया कि वे सभा में आये हैं, परन्तु वे न तो खड़े हुए और न आसन आदि देकर सत्कार ही किया। यहाँ तक कि वे अपने आसन से हिले डुले भी नहीं। त्रिकालदर्शी समर्थ बृहस्पतिजी ने देखा कि यह ऐश्वर्यमद का दोष है। बस, वे झटपट वहां से निकलकर चुपचाप अपने घर चले आये। उसी समय इंद्र को चेत हुआ। वे समझ गए कि मैंने अपने गुरुदेव की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवहेलना की है। वे भरी सभा में स्वयं अपनी ही निंदा करने लगे। वे कहने लगे कि मैंने ऐश्वर्य के नशे में चूर होकर अपने गुरुदेव का तिरस्कार किया है। सचमुच मेरा यह कर्म अत्यंत निंदनीय है। जो यह कहते हैं कि सम्राट को किसी के आने पर राजसिंहासन से नहीं उठना चाहिए, वे धर्म के रहस्य को नहीं जानते हैं। मेरे गुरुदेव बृहस्पतिजी ज्ञान के अथाह समुद्र हैं। अब मैं उनके चरणों में अपना माथा टेककर उन्हें साथ ले आऊँगा।

देवराज इस प्रकार सोच रहे थे कि भगवान् बृहस्पतिजी अपने घर से निकल कर अंतर्धान हो गए।

देवराज इंद्रने अपने गुरुदेव को बहुत ढूँढ़ा ढूँढ़वाया, परन्तु उनका कहीं पता नहीं चला। तब वे गुरुके बिना अपने को सुरक्षित न समझकर देवताओं के साथ अपनी बुद्धि के अनुसार स्वर्ग की रक्षा का उपाय सोचने लगे, परन्तु वे कुछ भी सोच न सके। उनका चित्त अशांत ही रहा। उन्हें कोई उपाय नहीं सूझा।

दैत्यों को भी देवगुरु बृहस्पति और देवराज इंद्र की अनबन का पता चल गया। तब उन मदोन्मत्त और आततायी असुरों ने अपने गुरु शुक्राचार्य जी की आज्ञा से देवताओं पर विजय पाने के लिए धावा बोल दिया। उन्होंने अपने प्रहार से देवताओं को व्यथित कर दिया। देवता रण छोड़कर भागने के लिए मजबूर हो गए।

तब इंद्र के साथ सभी देवता ब्रह्माजी की शरण में गए। स्वयंभू एवं समर्थ ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि तुमलोगों ने ऐश्वर्य के मद से अंधे होकर अपने गुरुदेव का सम्मान नहीं किया। उसी अनीति का यह फल है कि आज समृद्धशाली होने पर भी तुम्हें अपने निर्बल शत्रुओं के सामने नीचा देखना पड़ा। इसलिय अब तुमलोग शीघ्र त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप के पास जाओ और उन्हीं की सेवा करो। वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सच्चे ब्राह्मण, तपस्वी और संयमी हैं। यदि तुमलोग उनके असुरों के प्रति प्रेम की उपेक्षा कर सको और उनका सम्मान कर सको तो वे तुम्हारा कार्य सिद्ध कर देंगे।

देवताओंने विश्वरूप के पास जाकर कहा कि पुत्र विश्वरूप! हम तुम्हारे पितर हैं। इस समय शत्रुओं ने हमें जीत लिया है। तुम अपने तपोबल से हमारा दुःख, दारिद्रय और पराजय टाल दो। पुत्र, तुम ब्रह्मनिष्ठ हो, अतः स्वतः ही हमारे गुरु हो। आवश्यकता पड़ने पर अपने से छोटे के पैर छूना भी निंदनीय नहीं है। वेदज्ञान को छोड़कर केवल अवस्था बड़प्पन का कारण नहीं है।

इस प्रकार प्रार्थना करने पर विश्वरूप ने कहा कि यद्यपि पुरोहिती का काम ब्रह्मतेज को क्षीण करने वाला है और धर्मशील महात्माओं ने इसकी निंदा की है, तथापि आप मेरे स्वामी हैं और लोकेश्वर होकर भी मुझसे प्रार्थना कर रहें हैं। अतः मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

समर्थ विश्वरूपजी ने, शुक्राचार्य के नीतिबल से असुरों की सुरक्षित संपत्ति उनसे से छीन कर, वैष्णवी विद्या के बल पर देवराज इंद्र को दिला दी। यह "नारायण कवच" वही विद्या है जिससे सुरक्षित होकर इंद्र ने असुरों की सेना पर विजय प्राप्त की थी।

यह "नारायण कवच" कवच है। पहले जब सेनाएं युद्ध में जाती थीं तो वे कवच को धारण करती थीं। जिस तरह से कवच के द्वारा शरीर की रक्षा होती है उसी तरह से नारायण कवच से नकारात्मक ऊर्जाओं, क्रियाओं, और मानसिक भ्रम और दुर्बुद्धि से रक्षा होती है।

नकारात्मक मतलब नेगेटिव। हमारे मन में जो भी विचार चलते हैं वे सभी अपने आस पास को प्रभावित जरूर करतें हैं। जैसे कोई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यक्ति ज्यादातर समय चिंता ही करता रहता है। अब वह जिस कमरे में रहता है वह कमरा भी चिंता की तरंगों से भर जाता है। उस कमरे में जो भी व्यक्ति जायेगा उस पर वे तरंगे अपना प्रभाव डालेंगी। यदि इस नए व्यक्ति की तरंगें उन चिंता की तरंगों से कमजोर है तो वे तरंगे इस नए व्यक्ति पर हावी हो जाएंगी। वह नया व्यक्ति भी बेवजह अनर्गल चिंता करने लगेगा। जो व्यक्ति बहुत चंचल, अव्यवस्थित या क्रोधी स्वभाव का होता है उसके नजदीक बैठने से भी मन चंचल और अव्यवस्थित होने लगता है। नकारात्मक ऊर्जा केवल व्यक्ति में ही नहीं होती यह स्थान में भी होती है।

जिस जगह किसी की हत्या हुई होती जैसे कसाईघर आदि उस जगह पर जाने मात्र से ही भय होता है। ये सभी नकारात्मक ऊर्जा हैं।

इस नारायण कवच का पाठ करने से नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा होती है।

उसी तरह सकारात्मक ऊजाएँ भी होती हैं। हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जिनके पास बैठने से ही शांति महसूस होती है और उनके नजदीक जाने मात्र से ही मन आनंदित होने लगता है। उसी तरह जिन स्थानों में कभी कोई व्यक्ति सत्य, प्रेम, करुणा आदि से भरकर रहता है उस स्थल पर जाने मात्र से भी शांति होती है। भारत में विभिन्न तीर्थ स्थानों पर प्रतिदिन कुछ न कुछ पूजा पाठ या कर्मकाण्ड होता है। उन क्रियाओं के बल से, उन जगहों पर जाने मात्र से शांति, शक्ति और कार्यक्षमता बढ़ जाती है। उन जगहों पर जाने पर, मुख्य स्थल में (गर्भगृह आदि) थोड़े समय के लिए भी टिकने से ऊर्जा मिलती है। वैसे तीर्थ स्थान, देव-मंदिर, आश्रम, आदि सकारात्मक ऊर्जा के केन्द्र हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस तरह नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जाओं के इस सूक्ष्म भेद को समझा जा सकता है। नारायण कवच के पाठ से हमारे जीवन से नकारात्मकता खत्म होती है और सकारात्मक ऊर्जाएँ बढ़ती हैं।

मद   अहंकार से भर कर इन्द्र ने बुद्धिस्वरूप गुरु का अपमान किया और संकट में पड़ गए। उसी तरह से हम भी अपनी ही बुद्धि का अपमान कर बैठते हैं। जिस बात को हम सही समझते हैं वह नहीं करते और जिस बात को गलत समझते हैं वह कर बैठते हैं। हम कुछ वैसा कर जाते हैं, जिसे हम स्वयं ठीक नहीं समझते। इससे गलती करने के फल का गलत परिणाम तो झेलना ही पड़ता है साथ ही साथ जब हम अपनी ही बात नहीं मानते हैं तो अपने आप में ग्लानि होती है। इससे हमारी कार्य क्षमता, मन की प्रसन्नता आदि सकारात्मक प्रवृति कम होती है और आत्मग्लानि, आत्मविश्वास की कमी आदि नकारात्मक प्रवृति बढ़ती है। इस नारायण कवच में उन उन दुर्बुद्धियों भ्रमों को इंगित करते हुए उनसे रक्षा की प्रार्थना की गयी है।

नारायण कवच में भगवान नारायण के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन है और उन स्वरूपों द्वारा की गयी अद्भुद् लीलाओं और गुणों से जिस प्रकार के संकट, दोष और दुर्गुणों का परिहार किया गया है, उन संकटों, दोष   दुर्गुणों के परिहार के लिए प्रार्थना है। उदाहरण के लिए, योगीश दत्तात्रेय से योग साधना के विघ्नों के निवारण के लिए प्रार्थना है। भगवान राम से यात्रा प्रवास आदि में रक्षा की प्रार्थना है तो भगवान बुद्ध से पाखंडियों और आलस्य से बचने की प्रार्थना है। इसके साथ साथ कुछ सूक्ष्म नकारात्मक जीव होते हैं जैसे प्रेत, कुष्माण्ड, यक्ष आदि। इस स्तोत्र में उन से भी रक्षा का विधान है। मलीन और निम्न तंत्र-मंत्र आदि के द्वारा समाधान खोजने के अपेक्षा नारायण कवच ज्यादा प्रभावी है। इस कवच के उपसंहार में कहा गया है कि जो कुछ भी कार्य और कारण, बनानेवाला और बनने वाला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है, वह सब भगवान हीं हैं। इस सत्य के प्रभाव से मेरे सारे उपद्रव शांत हो जाएँ।

पाठ विधि

शुद्ध होकर मन में निश्चय कर पाठ करने बैठें। इस स्तोत्र में सर्वप्रथम न्यास का विधान है। न्यास का अर्थ है कि मंत्र को शरीर के विभिन्न हिस्सों में स्थापित करना। नारायण कवच के शुरुआत में कुछ मंत्र दिये गए हैं। उन मंत्रों को शरीर में विभिन्न स्थान पर स्थापित करना ही न्यास है। संकेत रूप से न्यास की विधि नारायण कवच के मूल में दी गयी है। उसी को सरल कर स्तोत्र शुरू होने से पहले दिया गया है। न्यास में जिन अंगों का नाम है उन अंगों को स्पर्श करना चाहिए। पाठ करने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण भगवान का ध्यान करे और अपने आप को भी भगवान के ही रूप में ध्यान कर इस कवच का पाठ करें। अगर वैसा न हो पाए तो सीधे पाठ करते हुए भगवान के उन स्वरूपों का ध्यान भी किया जा सकता है। इसके साथ ही स्तोत्र में कुछ स्थलों में शरीर के विभिन्न अंगों के नाम हैं। पाठ करते समय उन अंगों पर भी ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है, जिससे तत्काल पूरे शरीर का तनाव खत्म हो जाता है। जो लोग अपने को नकारात्मकता अवसाद आदि से घिरा हुआ पाते हैं, उससे निकलने के लिए यह अमोघ उपाय है। परम्परानुसार नारायण कवच के पाठ से समस्त विघ्नों का नाश तथा विजय, आरोग्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

इस स्तोत्र का निष्काम भाव से पाठ करने से चित्त शुद्धि होती है और ब्रह्म विद्या को धारण करने की योग्यता का विकास होता है। यह स्तोत्र प्रधानतः कर्मकाण्डात्मक है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह स्तोत्र भागवत के षष्ठ स्कंध के अष्टम अध्याय में वर्णित है। मूल कवच श्लोक संख्या 12 से 34 तक के 23 श्लोक ही हैं। शुरू के 3 श्लोक प्रस्तावना, फिर 8 श्लोक पाठविधि और अंत के 8 श्लोक फलश्रुति हैं। परन्तु, परम्परानुसार जिस अध्याय में कोई स्तोत्र हो उस पूरे अध्याय का पाठ किया जाता है अतः यहाँ पर पूरे अष्टम अध्याय के 42 श्लोक दिये गये हैं।

।। श्रीहरिः ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीनारायणकवच पाठविधि

न्यास

सर्वप्रथम श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायणको नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकारसे न्यास करें

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः पादयोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंका स्पर्श करें)।

ॐ नं नमः जानुनोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठी इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनोंका स्पर्श करें)।

ॐ मों नमः ऊर्वोः (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनोंको मिलाकर दोनों पैरोंकी जाँघका स्पर्श करें)।

ॐ नां नमः उदरे (दाहिने हाथकी तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनोंको मिलाकर पेटका स्पर्श करें)।

ॐ रां नमः हृदि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे हृदयका स्पर्श करें)।

ॐ यं नमः उरसि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनीसे छातीका स्पर्श करें)।

ॐ णां नमः मुखे (तर्जनी-अँगूठेके संयोगसे मुखका स्पर्श करें)।

ॐ यं नमः शिरसि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करें)।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिनी तर्जनीके सिरेका स्पर्श करें)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी मध्यमा अँगुलीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ मों नमः दक्षिणानामिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ भं नमः दक्षिणकनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठेसे दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम् (बाँयें अँगूठेसे बायें हाथ की कनिष्ठिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ वं नमः वामानामिकायाम् (बाँये अँगूठेसे हाथकी अनामिकाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ तें नमः वाममध्यमायाम् (बाँयें अँगूठेसे बाँयें हाथकी मध्यमाका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ वां नमः वामतर्जन्याम् (बाँयें अँगूठेसे बाँयें हाथकी तर्जनीका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ सुं नमः दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (दाहिने हाथ की चारों अंगुलियोंसे दाहिने हाथके अँगूठेका ऊपरवाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ दें नमः दखिणाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (दाहिने हाथकी चारों अँगुलियोंसे दाहिने हाथके अंगूठेका नीचेवाला पोर छूएँ)।

ॐ वां नमः वामाङ्गुष्ठोर्ध्ववर्वणि (बाँयें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बाँयें अँगूठेके ऊपरवाला पोर छूएँ)।

ॐ यं नमः वामाङ्गुष्ठाधःपर्वणि (बाँयें हाथकी चारों अँगुलियोंसे बाँये हाथके अँगूठेका नीचेवाला पोर छूएँ)।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः हृदये (तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिकासे हृदयका स्पर्श करें)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ विं नमः मूर्धनि (तर्जनी-मध्यमाके संयोगसे सिरका स्पर्श करें)।

ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये (तर्जनी-मध्यमासे दोनों भौंहों का स्पर्श करें)।

ॐ णं नमः शिखायाम् (अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करें)।

ॐ वें नमः नेत्रयोः (तर्जनी-मध्यमासे दोनों नेत्रोंका स्पर्श करें)।

ॐ नं नमः सर्वसंधिषु (तर्जनी-मध्यमा और अनामिकासे शरीरके सभी जोड़ों जैसे कंधा, केहुनी, घुटना आदि का स्पर्श करें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम् (पूर्वकी ओर चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेय्याम् (अग्निकोणमें चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम् (दक्षिणकी ओर चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् नैर्ऋत्ये (नैर्ऋत्यकोणमें चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम् (पश्चिमकी ओर चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये (वायुकोणमें चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम् (उत्तरकी ओर चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम् (ईशानकोणमें चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम् (ऊपरकी ओर चुटकी बजायें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम् (नीचे की ओर चुटकी बजायें)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। श्रीहरिः ।।

अथ श्रीनारायणकवच

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्।।1।।
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् ये गुप्तोऽजयन्मृधे।।2।।

राजा परीक्षित्ने पूछा भगवान्! देवराज इन्द्रने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओंकी सेनाको खेल-खेलमे ही जीतकर त्रिलोकीकी राजलक्ष्मीका उपयोग किया, आप उस नाराणकवचको मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमिमें किस प्रकार आततायी शत्रुओंपर विजय प्राप्त की।।1 2।।

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु।।3।।

श्रीशुकदेवजीने कहा परीक्षित्! जब देवताओंने विश्वरूपको पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्रके प्रश्न करनेपर विश्वरूपने उन्हें नारायणकवचका उपदेश दिया। तुम एकाग्रचित्तसे उसका श्रवण करो।।3।।

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः।।4।।
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि।।5।।
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोङ्कारादीनि विन्यसेत्
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा।।6।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वरूपने कहा देवराज इन्द्र! भयका अवसर उपस्थित होनेपर नारायणकवच धारण करके अपने शरीरकी रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन करें, फिर हाथमें कुशकी पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाएँ। इसके बाद कवचधारणपर्यन्त और कुछ न बोलनेका निश्चय करके पवित्रतासे **'ॐ नमो नारायणाय'** और **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इन मन्त्रोंके द्वारा हृदयादि अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि करन्यास करें। पहले **'ॐ नमो नारायण'** इस अष्टाक्षर मन्त्रके ॐ आदि आठ अक्षरों क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिरमें न्यास करें। अथवा पूर्वोक्त मन्त्रके यकारसे लेकर ॐकारपर्यन्त आठ अक्षरोंका सिरसे आरम्भ करके उन्हीं आठ अंगोंमें विपरीत क्रमसे न्यास करें।।4 6।।

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु।।7।।

तदनन्तर **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इन द्वादशाक्षर-मन्त्रके ॐ आदि बारह अक्षरोंका दायीं तर्जनीसे बायीं तर्जनीतक दोनों हाथकी आठ अंगुलियों और दोनों अँगूठोंकी दो-दो गाँठोंमें न्यास करें।।7।।

न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्।।8।।
वेकारं नेत्रायोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसन्धिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः।।9।।
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नमः इति।।10।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर **'ॐ विष्णवे नमः'** इस मन्त्रके पहले अक्षर 'ॐ'का हृदयमें, 'वि'का ब्रह्मरन्ध्रमें, 'ष'का भौंहोंके बीचमें, 'ण'का चोटीमें, 'वे'का दोनों नेत्रोंमें और 'न'का शरीरकी सब गाँठोंमें न्यास करें। तदनन्तर **'ॐ मः अस्त्राय फट्'** कहकर दिग्बन्ध करें।, इस प्रकार न्यास करनेसे इस विधिको जाननेवाला पुरुष मन्त्रस्वरूप हो जाता है।।9 10।।

(उपरोक्त 10 श्लोकों का अर्थ स्वरूप न्यास विधि शुरू में दिया गया है।)

आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षटशक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्।।11।।

इसके बाद जब समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्यसे परिपूर्ण इष्टदेव भगवान्‌का ध्यान करें और अपनेको भी तद्रूप ही चिन्तन करें। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवचका पाठ करें।।11।।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः।।12।।

भगवान् श्रीहरि गरुड़जीकी पीठपर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठो सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथोंमें शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, वाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकारस्वरूप प्रभु सब प्रकारसे सब ओरसे मेरी रक्षा करें।।12।।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति
र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात
त्रिविक्रमः खऽवतु विश्वरूपः ।।13।।

मत्स्यमूर्ति भगवान् जलके भीतर जलजन्तुओंसे और वरुणके पाशसे मेरी रक्षा करें। मायासे ब्रह्मचारीका रूप धारण करनेवाले वामनभगवान् स्थलपर और विश्वरूप श्रीत्रिविक्रमभगवान् आकाशमें मेरी रक्षा करें।।13।।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्य पतंश्च गर्भाः।।14।।

जिसके घोर अट्टाहास करनेपर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियोंके गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययूथपतियोंके शत्रु भगवान् नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानोंमें मेरी रक्षा करें।।14।।

रक्षात्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्।।15।।

अपनी दाढ़ोंपर पृथ्वीको उठा लेनेवाले यज्ञमूर्ति वराहभगवान् मार्गमें, परशुरामजी पर्वतोंके शिखरोंपर और लक्ष्मीजीके सहित भरतके बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवासके समय मेरी रक्षा करें।।15।।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा
न्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्।।16।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवान् नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों (तंत्र मंत्र के प्रयोग से) और सब प्रकारके प्रमादसे (आलस्य) मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्वसे, योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय योगके विघ्नोंसे और त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मबन्धनोंसे मेरी रक्षा करें।।16।।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्।।17।।

परमर्षि सनत्कुमार कामदेवसे, हयग्रीवभगवान् मार्गमें चलते समय देवमूर्तियोंको नमस्कार आदि न करनेके अपराधसे, देवर्षि नारद सेवापराधोंसे और भगवान् कच्छप सब प्रकारके नरकोंसे मेरी रक्षा करें।।17।।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः।।18।।

भगवान् धनवन्तरि कुपथ्यसे, जितेन्द्रिय भगवान् ऋषभदेव सुख-दुःख, लाभ हानि, जय पराजय, यश अपयश आदि भयदायक द्वन्द्वोंसे, यज्ञभगवान् लोकापवादसे, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टोंसे और श्रीशेषजी क्रोधवशनाम सर्पोंके गणसे मेरी रक्षा करें।।18।।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः।।19।।

भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी अज्ञानसे तथा बुद्धदेव पाखण्डसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और प्रमादसे (आलस्यसे) मेरी रक्षा करें। धर्म-रक्षाके लिए महान् अवतार धारण करनेवाले भगवान् कल्कि पापबहुल कलिकालके दोषोंसे मेरी रक्षा करें।।19।।

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति
र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः।।20।।

प्रातःकाल भगवान् केशव अपनी गदा लेकर, दिन में भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहरके पहले भगवान् नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहरको भगवान् विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।।20।।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः।।21।।

तीसरे पहरमें भगवान् मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकालमें ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्तके बाद हृषीकेश, अर्धरात्रिके पूर्व तथा अर्धरात्रिके समय अकेले भगवान् पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।।21।।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः।।22।।

रात्रिके पिछले पहरमें श्रीवत्सलांछन श्रीहरि, उषाकालमें खड्गधारी भगवान् जनार्दन, सूर्योदयसे पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण संध्याओंमें कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।।22।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः।।23।।

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथके पहिये) की तरह है। आपके किनारेका भाग प्रलयकालीन अग्निके समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान्‌की प्रेरणासे सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायुकी सहायतासे सूखे घास-फूसको जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रुसेनाको शीघ्र-से-शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।।23।।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो
भूतग्रहांचूर्णय चूर्णयारीन्।।24।।

कौमोदकी गदा! आपसे छूटनेवाली चिनगारियोंका स्पर्श वज्रके समान असह्य है। आप भगवान् अजितकी (विष्णु) प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ। इसलिए आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहोंकों अभी कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओंको चूर-चूर कर दीजिये।।24।।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ
पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्।।25।।

शंखश्रेष्ठ! आप भगवान् श्रीकृष्णके फूँकनेसे भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओंका दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियोंको यहाँसे झटपट भगा दीजिये।।25।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्।।26।।

भगवान्‌की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान्‌की प्रेरणासे मेरे शत्रुओंको छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान्‌की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्रकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओंकी आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदाके लिये अन्धा बना दीजिये।।26।।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा।।27।।
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः।।28।।

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगनेवाले जन्तु, दाढ़ोंवाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियोंसे हमें जो-जो भय हों और जो-जो हमारे मंगलके विरोध ी हों वे सभी भगवान्‌के नाम, रूप तथा आयुधोंका कीर्तन स्मरण आदि करनेसे तत्काल नष्ट हो जायें।।27 28।।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः।।29।।

बृहद्, रथन्तर आदि सामवेदी स्तोत्रोंसे जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान् गरुड़ और विष्वक्सेनजी अपने नामोच्चारणके प्रभावसे हमें सब प्रकारकी विपत्तियोंसे बचायें।।29।।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः।।30।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीहरिके नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणोंको सब प्रकारकी आपत्तियोंसे बचायें।।30।।

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः।।31।।

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत् है, वह वास्तवमें भगवान् ही हैं इस सत्यके प्रभावसे हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायें।।31।।

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया।।32।।
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः।।33।।

जो लोग ब्रह्म और आत्माकी एकताका अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टिमें भगवान्का स्वरूप समस्त विकल्पों भेदोंसे रहित है, फिर भी वे अपनी माया-शक्तिके द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियोंको धारण करते हैं। यह बात निश्चितरूपसे सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान् श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपोंसे हमारी रक्षा करें।।32 33।।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता
दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः।।34।।

जो अपने भयंकर अट्टहाससे सब लोगोंके भयको भगा देते हैं और अपने तेजसे सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान् नृसिंह दिशा-विदिशामें, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें।।34।।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्।।35।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायणकवच सुना दिया। इस कवचसे तुम अपनेको सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य -यूथपतियोंको (सेनापतियों से) जीत लोगे।।35।।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्चति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते।।36।।

इस नारायणकवचको धारण करनेवाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रोंसे देख लेता अथवा पैरसे छू देता है, वह तत्काल समस्त भयोंसे मुक्त हो जाता है।।36।।

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्।।37।।

जो इस वैष्णवी विद्याको धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि सिंह्क जीवोंसे कभी किसी प्रकारका भय नहीं होता।।37।।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि।।38।।

देवराज! प्राचीन कालकी बात है, एक कौशिकगोत्री ब्राह्मणने इस विद्याको धारण करके योगाधारणासे अपना शरीर मरुभूमिमें त्याग दिया।।38।।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः।।39।।

जहाँ उस ब्राह्मणका शरीर पड़ा था, उसके ऊपरसे एक दिन गन्ध ार्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियोंके साथ विमानपर बैठकर निकले।।39।।

गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचनादस्यीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम् स्वमन्वगात्।।40।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वहाँ आते ही वे नीचेकी ओर सिर किये विमानसहित आकाशसे पृथ्वीपर गिर पड़े। इस घटनासे उनके आश्चर्यकी सीमा न रही। जब उन्हें वालखिल्य मुनियोंने बतलाया कि यह नारायणकवच धारण करनेका प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मणदेवताकी हड्डियोंको ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदीमें प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोकको गये।।40।।

श्रीशुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्।।41।।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं परीक्षित! जो पुरुष इस नारायणकवच को समयपर सुनता है और जो आदरपूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदरसे झुक जाते हैं और वह सब प्रकारके भयोंसे मुक्त हो जाता है।।41।।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्।।42।।

परीक्षित! शतक्रतु इन्द्रने आचार्य विश्वरूपजीसे यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमिमें असुरोंको जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मीका उपभोग करने लगे।।42।।

इति श्री नारायण कवचम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

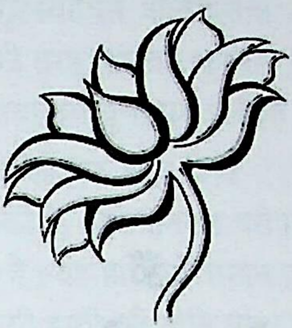

"स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्
निषेधशेषो जयतादशेषः।।

गजेन्द्र मोक्ष- 24

वे भगवान् न देवता है और न असुर। वे मनुष्य और पशु-पक्षी भी नहीं हैं। न वे स्त्री हैं, न पुरुष और न नपुंसक। वे कोई साधारण या असाधारण प्राणी भी नहीं हैं। न वे गुण हैं और न कर्म, न कार्य हैं और न तो कारण ही। सबका निषेध हो जानेपर जो कुछ बचा रहता है, वही उनका स्वरूप है तथा वे ही सब कुछ हैं। वे ही परमात्मा मेरे उद्धारके लिए प्रकट हों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

गजेन्द्रमोक्ष-स्तोत्र परिचय

गजेन्द्र मोक्ष की कथा को शुकदेव जी एक आख्यायिका के रूप में सुनाते हैं। सामान्यतः पशुओं को भाषा व्यवहार करनेवाला नहीं माना जाता परंतु संस्कार रूप से गुण-दोष विद्यमान रहते हैं। विशेष रूप से उपनिषद् आदि में कुछ पशु-पक्षियों को ज्ञान का अधिकारी ही नहीं ज्ञान का उपदेशक भी कहा गया है। इस पर विचार करने से ज्ञान की सूक्ष्मता, व्यापकता और मन में संस्कार कैसे कार्य करते हैं उसका ज्ञान होता है। अगर यह कथा सिर्फ कथा ही लगती है, तो भी गजेन्द्र स्तोत्र दिव्य भाव और ज्ञान से सम्पन्न है। यह स्तोत्र और उसकी कथा दोनों ही आदरणीय है। गजेन्द्र मोक्ष की आख्यायिका यह है कि द्रविड़ देश में एक पाण्ड्यवंशी राजा था। उसका नाम इन्द्रद्युम्न था। वह भगवान् का एक श्रेष्ठ उपासक एवं अत्यंत यशस्वी था। एक बार राजा इन्द्रद्युम्न राजपाट को छोड़कर मलय पर्वत पर रहने लगे। उन्होंने जटाएँ बढ़ा ली, तपस्वी का वेश धारण कर लिया। एक दिन स्नान के बाद पूजाके समय मनको एकाग्र कर एवं मौनव्रती होकर वे सर्वशक्तिमान भगवान् की आराधना कर रहे थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसी समय दैवयोग से परम यशस्वी अगस्त्य मुनि अपनी शिष्य मंडली के साथ वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि यह राजा प्रजापालन और गृहस्थोचित अतिथिसेवा आदि धर्म का परित्याग करके तपस्वियों की तरह एकांतमे चुपचाप बैठकर उपासना कर रहा है। इसिलिए वे राजा इन्द्रद्युम्न पर क्रोधित हो गए।

उन्होंने राजा को यह श्राप दिया इस राजा ने गुरुजनों से शिक्षा नहीं ग्रहण की है, अभिमानवश परोपकार से निवृत्त होकर यह मनमानी कर रहा है। यह हाथी के समान जड़बुद्धि है। इसलिए इसे वही घोर अज्ञानमयी हाथी की योनि प्राप्त हो।

शाप एवं वरदान देने में समर्थ अगस्त्य ऋषि इस प्रकार शाप देकर अपनी शिष्य मंडली के साथ वहां से चले गए। राजा इन्द्रद्युम्न ने यह समझकर संतोष किया कि यह मेरा प्रारब्ध ही था। इसके बाद आत्मा की विस्मृति करा देनेवाली हाथी की योनि उन्हें प्राप्त हुई।

उसी प्रकार ''हूहू'' नाम का एक गन्धर्व था। वह तरह तरह की चेष्टा से लोगों को हँसाया करता था। एक बार देवल ऋषि जल में स्नान कर तर्पण आदि कर करे थे। उस गन्धर्व ने जल में घुसकर उनका पैर पकड़ लिया मानो ग्राह हो। अचानक पैर पकडे जाने से ऋषि चौंक पड़े। यह देखकर सभी हँस पड़े। ऋषि ने सारा खेल समझ लिया। उन्होंने क्रुद्ध होकर श्राप दे दिया कि तुम ग्राह जैसा करते हो, अतः ग्राह हो जाओ। हूहू गन्धर्व उनसे क्षमा याचना करने लगा। शांत होकर ऋषि ने कहा कि ग्राह होकर भी इसी तरह से सबका पैर पकड़ते रहो। भगवान् की कृपा से ग्राह योनि से निकल जाओगे।

इधर राजा इन्द्रद्युम्न हाथी बन गया। त्रिकूट नामक एक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ पर्वत था। उसी पर्वत के घोर जंगल में बहुत सी हथिनियों के साथ शापग्रस्त राजा हाथी के रूप में निवास करने लगा। वह बड़े बड़े शक्तिशाली हाथियों का सरदार था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिन वह गजेन्द्र, हथिनियों, अन्य हाथी और हाथी के छोटे छोटे बच्चों के साथ घूम रहा था। बड़े जोर की धूप थी, इसीलिए वह व्याकुल हो उठा। उसे तथा उसके साथियों को प्यास सताने लगी। उस समय दूरसे ही कमल के परागसे सुवासित वायु की गंध सूंघकर वह उसी दिशा की ओर चल पड़ा। थोड़ी ही देर में वेग से चल कर वह सरोवर के तट पर जा पहुँचा। उसी सरोवर में "हूहू" गन्धर्व ग्राह के रूप में रह रहा था।

गजेन्द्र ने उस निर्मल और मधुर जल में घुसकर पहले तो अपनी सूँड से उठाकर जी भर जल पिया फिर उस जल में स्नान करके अपनी थकान मिटायी।

गजेन्द्र मोहग्रस्त होकर अपनी सूँड से जल की फुहारें छोड़ छोड़कर साथ की हाथिनियों और बच्चों को नहलाने लगा। भगवान् की माया से मोहित हुआ गजेन्द्र उन्मत्त हो रहा था। उस बेचारे को इस बात का पता ही न था कि उसके सिरपर बहुत बड़ी विपत्ति मँडरा रही है।

गजेन्द्र जिस समय इतना उन्मत्त हो रहा था, उसी समय प्रारब्ध की प्रेरणा से ग्राह ने उनका पैर पकड़ लिया। इस प्रकार एकाएक विपत्ति में पड़कर उस बलवान गजेन्द्र ने अपनी शक्ति के अनुसार अपने को छुड़ाने की बड़ी चेष्टा की, परन्तु छुड़ा न सका।

दूसरे हाथी, हथिनियाँ और गजेन्द्र की यह स्थिति देखकर घबड़ा गए और उन्होंने उसे सहायता पहुँचाने की कोशिश की, पर वे सभी असफल रहे।

गजेन्द्र और ग्राह अपनी अपनी पूरी शक्ति लगाकर भिड़े हुए थे। कभी गजेन्द्र ग्राह को बाहर खींच कर ले आता तो कभी ग्राह गजेन्द्र को भीतर खींच कर ले जाता। अंत में बहुत समय तक खींचे जाने से गजेन्द्र का शरीर शिथिल पड़ गया। न तो उसके शरीर में बल रह गया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और न मन में उत्साह। इधर ग्राह तो जलचर जीव ही ठहरा, इसीलिए उसकी शक्ति क्षीण होने के स्थान पर बढ़ गयी। वह बड़े उत्साह से और भी बल लगाकर गजेन्द्र को खींचने लगा।

इस प्रकार सर्वथा असमर्थ हो, प्राणसंकट में पड़ जाने से गजेन्द्र अपने छुटकारे का उपाय सोचने लगा। अंत में वह इस निश्चय पर पहुँचा कि यह ग्राह विधाता की फाँसी है। मेरे बराबर कई हाथी मिलकर भी मुझे नहीं छुड़ा सके। इसीलिए अब मैं संपूर्ण विश्व के एकमात्र आश्रय भगवान् की ही शरण लेता हूँ। यह काल बड़ा बली है। इससे भयभीत होकर जो कोई भगवान की शरण में जाता है, उसे वे प्रभु अवश्य बचा लेते हैं। उनके भय से भयभीत होकर मृत्यु भी अपना काम ठीक ठीक पूरा करती है। वही प्रभु सबके आश्रय हैं। मैं उन्हीं की शरण में जाता हूँ। ऐसा विचार कर वह गजेन्द्र अपने पूर्वजन्म (राजा इन्द्रद्युम्न के) में सीखे हुए स्तोत्र से भगवान् की स्तुति करने लगा। वही स्तोत्र गजेन्द्र स्तुति के नाम से प्रसिद्ध है।

इस स्तोत्र में गजेन्द्र ने बिना किसी भेदभाव के निर्विशेषरूप ईश्वर की स्तुति की थी, इसीलिए विभिन्न नाम रूपों को अपना मानने वाले ब्रह्मा आदि देवता उसकी रक्षा के लिए नहीं आये। उस समय सर्वात्मा होने के कारण सर्वदेवस्वरूप स्वयं भगवान् श्रीहरि प्रकट हो गए।

सरोवर के भीतर बलवान ग्राह ने गजेन्द्र को पकड़ रखा था और वह अत्यंत व्याकुल हो रहा था। जब उसने देखा कि श्रीहरि आ रहें हैं तब अपनी सूँड में तालाब से कमल का एक पुष्प उठाया और बड़े कष्ट से कहा हे नारायण! अखिल गुरु! भगवन्! आपको नमस्कार है।

भगवान् ने जब देखा कि गजेन्द्र अत्यंत पीड़ित हो रहा है तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने शीघ्रता से गजेन्द्र और ग्राह को सरोवर से बाहर निकाल लिया और ग्राह का मुंह फाड़ कर गजेन्द्र को छुड़ा लिया। वह ग्राह तुरंत ही दिव्य शरीर संपन्न हो गया। गजेन्द्र भी भगवान् के स्पर्श से अज्ञान के बंधन से मुक्त हो गया। उसने भगवान् का ही रूप प्राप्त कर लिया।

यह स्तोत्र वेदांत का स्पर्श करता है। सामान्यतः हम यही समझते हैं कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो बादलों के ऊपर रहने वाला कोई एक देवता हमारी सुनता है, उस प्रार्थना से खुश होकर वह हमारी कामनाओं की पूर्ति करता है, प्रार्थना और चापलूसी में हम कोई अंतर नहीं समझते। परन्तु इस स्तोत्र में गजेन्द्र (हाथी) किसी देवी देवता की प्रार्थना नहीं करता। वह तो खुले भाव से सिर्फ प्रार्थना करता है। साथ ही साथ वह कुछ मांगता भी नहीं है। वह निवेदन करता है कि मैं जीना नहीं चाहता। मैं अज्ञानसे छूटना चाहता हूँ, जो मेरे आत्मप्रकाश को रोककर रखता है।

हाथी जीव है। नारायण ईश्वर है। जैसे तालाब में बूँद रहता है वैसे ही ईश्वर में जीव है।

किसी कारण से बूँद में कम्पन होने लगे। उस कम्पन के फलस्वरूप पूरे तालाब में कम्पन होने लगे। बूँद के उस कम्पन का नाम प्रार्थना है। तालाब के कम्पन का नाम अनुकम्पा है।

उत्तम प्रार्थना वह है, जिसमें हम किसी दूसरे से याचना नहीं करते, वरन् अपने ही सर्वोत्कृष्ट रूप, अपनी ही समग्रता जिसका नाम ईश्वर है, उसके प्रति समर्पित होते हैं और उन ऊर्जाओं से जुड़ते है।

इस स्तोत्र में किसी एक व्यक्तित्व रूप आकृति वाले देवता की स्तुति नहीं है, वरन् निराकार और निर्गुण ईश्वर की स्तुति है। ईश्वर कोई और नहीं, हमारा ही पूर्ण रूप है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परन्तु इस स्तुति के फलस्वरूप जो अनुकम्पा करते हैं वे नारायण ही हैं। सामान्यतः हम यह मानते हैं कि ईश्वर की कोई एक आकृति है ही, अथवा यह मानते हैं कि उसकी कोई आकृति हो ही नहीं सकती। दोनों तरह का आग्रह गलत है। ईश्वर सिर्फ निराकार ही नहीं है अथवा सिर्फ आकारवाला ही नहीं है, इस बात को सीधे तरह से इस स्तोत्र में कहा गया है। इसमें प्रार्थना तो निराकार का है पर प्रकट साकार होते हैं।

श्रीमद्भागवत में इस स्तोत्र को दुःस्वप्न आदि का नाशक बताया गया है। परम्परानुसार इस स्तोत्र के पाठ से ऋण से मुक्ति, शत्रु से छुटकारा और दुर्भाग्य का नाश होता है। भगवान् कहते हैं कि जो लोग इस स्तुति से मेरा स्तवन करेंगे, मृत्यु के समय मैं उन्हें निर्मल बुद्धि प्रदान करूँगा।

मूलतः यह स्तोत्र गजेन्द्र ऐसी स्थिति में करता है, जब संकट में पड़ कर उसकी स्वयं की शक्ति और साथी सहियोगियों की मदद जरा भी काम में नहीं आती। अंत में सभी साथी भी पीछे हट जाते हैं। जो व्यक्ति अपने आप को किसी ऐसी स्थिति में पाता हो, जहाँ से निकलना उसके वश में न हो, वैसी स्थिति में यह स्तोत्र अत्यंत लाभकारी है। उदाहरण के लिए यह स्थिति आर्थिक बाधाएँ, जैसे कर्ज, दरिद्रता आदि हो सकती है, भयंकर असाध्य रोग व्याधि हो सकती है, अथवा कोई ऐसी लत, नशा या आदत हो सकती है जिससे छुटकारा पाना अपने वश में न हो। ये सभी एक तरह से ग्राह ही हैं जो हमारे जीवन और व्यक्तित्व को ग्रसित कर लेते हैं। हम चाहते हुए भी, अपनी सारी शक्ति लगाकर भी इनसे निकल नहीं पाते हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रार्थना बहुत असरकारक है। यह ऐसे ही किसी ग्राह (घड़ियाल) से ग्रसित जीव की निराकार ईश्वर के प्रति करुण प्रार्थना है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस स्तोत्र के शुरुआत में यह कहा गया है कि हाथी ने अपने मन को हृदय में एकाग्र कर पूर्व जन्म के सीखे हुए स्तोत्र का जाप किया। संकेत रूप से "मन को हृदय में एकाग्र करना" उपनिषदों में दिया गया प्रसिद्ध ध्यान की विधि का वर्णन है। इसका नाम दहर विद्या है। हृदय में अपने ध्यान को ले जाते हुए पाठ करने से बहुत अच्छी अनुभूति होती है।

यह स्तोत्र श्रीमद्भागवत् के अष्टम स्कंध के तृतीय अध्याय में है। यद्यपि मूल स्तोत्र, श्लोक संख्या 2 से 29 तक ही है। परन्तु पूरे अध्याय का पाठ करना चाहिए, अतः स्तोत्र रूप में पूरा तृतीय अध्याय दिया जा रहा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्री गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रम्

गजेन्द्रके द्वारा भगवान् की स्तुति और उसका संकट से मुक्त होना।

श्रीशुक उवाच

(दहर विद्या)

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्।। 1

श्रीशुकदेवजी कहते हैं परीक्षित्! अपनी बुद्धिको निश्चित कर लो कि भववान ही सबके आश्रय हैं। मैं उन्हीं की शरण में जाता हूँ। गजेन्द्रने अपने मनको हृदयमें एकाग्र किया और फिर पूर्वजन्ममें सीखे हुए श्रेष्ठ स्तोत्रके जपद्वारा भगवान्की स्तुति करने लगा।।1।।

(मन को हृदय में स्थापित करना संकेत रूप से दहर विद्या का वर्णन है)।

गजेन्द्र उवाच

ॐनमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि।। 2

गजेन्द्रेने कहा जो जगत्के मूल कारण हैं और सबके हृदयमें पुरुषके रूपमें विराजमान हैं एवं समस्त जगत्के एकमात्र स्वामी हैं, जिनके कारण इस संसारमें चेतनताका विस्तार होता है उन भगवानको मैं नमस्कार करता हूँ।।2।।

यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात् परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्।। 3

यह संसार उन्हींमें स्थित है, उन्हीं की सत्तासे इसका पता चलता है, वे ही इसमें व्याप्त हो रहे हैं और स्वयं वे ही इसके रूपमें प्रकट हो रहे हैं। यह सब होनेपर भी वे इस संसार और इसके कारण प्रकृतिसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वथा परे हैं। उन अपने आप हुए भगवान्‌की मैं शरण ग्रहण करता हूँ। ।3 । ।

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं
क्वचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः।। 4

यह विश्वप्रपंच उन्हींकी मायासे उनमें दिख रहा है। यह कभी प्रतीत होता है, तो कभी नहीं। परन्तु उनकी दृष्टि ज्यों-की-त्यों, एक-सी रहती हैं। वे इसके साक्षी हैं और उन दोनोंको ही देखते रहते हैं। वे सबके मूल हैं और अपने मूल भी वही हैं। कोई दूसरा उनका कारण नहीं है। वे ही सबसे परे प्रभु मेरी रक्षा करें। ।4 । ।

कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः।। 5

प्रलयके समय लोक, लोकपाल और इन सबके कारण सम्पूर्णरूपसे नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल अत्यन्त घना और गहरा अन्धकार-ही-अन्धकार रहता है। परन्तु अनन्त परमात्मा उससे सर्वथा परे विराजमान रहते हैं। वे ही प्रभु मेरी रक्षा करें। ।5 । ।

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु-
र्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो
दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु।। 6

उनकी लीलाओंका रहस्य जानना बहुत ही कठिन है। वे नटकी भाँति अनेकों वेष धारण करते हैं। उनके वास्तविक स्वरूपको न तो देवता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानते हैं और न ऋषि ही; फिर दूसरा ऐसा कौन प्राणी है जो वहाँ तक जा सके और उसका वर्णन कर सके? वे प्रभु मेरी रक्षा करें। ।6 । ।

दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं
विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः । । 7

जिनके परम मंगलमय स्वरूपका दर्शन करनेके लिये महात्मागण संसारकी समस्त आसक्तियोंका परित्याग कर देते हैं और वनमें जाकर अखण्डभावसे अलौकिक व्रतोंका पालन करते हैं तथा अपने आत्माओं सबसे हृदयमें विराजमान देखकर स्वाभाविक ही सबकी भलाई करते हैं वे ही मुनियों के इष्ट भगवान् मेरे सहायक और मेरी गति हैं। ।7 । ।

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा
न नामरूपे गुणदोष एव वा।
तथापि लोकाप्ययसंभवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति । । 8

न उनके जन्म-कर्म हैं और न-रूप; फिर गुण और दोष कैसे हो सकते हैं? फिर भी विश्वकी सृष्टि और संहार करनेके लिये समय-समयपर वे उन नाम-रूप-गुण-दोष-जन्म-कर्म आदि को अपनी मायासे स्वीकार करते हैं। ।8 । ।

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे । । 9

उन्हीं अनन्त शक्तिमान् सर्वैश्वर्यमय परब्रह्म परमात्माको मैं नमस्कार करता हूँ। वे अरूप होनेपर भी बहुरूप हैं। मैं उन आश्चर्य कर्म करनेवाले के चरणोंमें नमस्कार करता हूँ। ।9 । ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि।। 10

स्वयंप्रकाश, (जिसको देखनेके लिए किसी और साधनकी जरूरत न पड़े, जो आत्मप्रदीप है, जेसे दीपकको देखनेके लिए किसी दूसरे प्रकाशकी जरूरत नहीं है।) सबके साक्षी परमात्माको मैं नमस्कार करता हूँ। जो मन, वाणी और चित्तसे अत्यन्त दूर भी हैं उन परमात्माको मैं नमस्कार करता हूँ।।10।।

सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ।। 11

विवेकी पुरुष, जिनका अन्तःकरण शुद्ध हो चुका है, वे निष्कर्मताके द्वारा जिन्हें प्राप्त करते हैं, वैसे कैवल्यके नाथ, निर्वाण सुख और ज्ञानस्वरूप परमात्माको मैं नमस्कार करता हूँ।।11।।

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च।।12

जो सत्त्व, रज, तम इन तीन गुणोंका धर्म स्वीकार करके क्रमशः शान्त, घोर और मूढ़ अवस्था भी धारणा करते हैं, उन भेदरहित समभावसे स्थित एवं ज्ञानघन प्रभुको मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।।12।।

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ।। 13

सभी क्षेत्रोंके ज्ञाताको नमस्कार है जो सबके अध्यक्ष (स्वामी) हैं और सभीके साक्षी हैं, जो अपने आपके भी मूल पुरुष हैं और मूल प्रकृति हैं उनको नमस्कार है।।13।।

सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः।।14

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो सभी इन्द्रियों और उसके गुणोंके द्रष्टा हैं, मनमें चलनेवाले सभी विचारोंके कारण हैं, जो नहीं है और जो है उन दोनों के द्वारा आपका ही पता चलता है। ऐसे आपको नमस्कार है।।।14।।

नमः नमस्तेऽखिलकारणाय
निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय
नमोऽपवर्गाय परायणाय।। 15

सभीके कारण रूप और बिना किसी कारणके और अद्‌भुत् कारण रूप वाले आपको नमस्कार है। जैसे सभी नदी-झरने महा समुद्र की ओर ही जाते हैं उसी तरह समस्त वेद-शास्त्र आपकी ओर ही जाते हैं। ऐसे मोक्ष स्वरूप आपको नमस्कार है।।।15।।

गुणारणिच्छन्नचिदूष्पपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-
स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि।।16

जैसे काठमें अग्नि गुप्त रहती है वैसे ही आप अपनेको गुणोंसे ढक कर रखते हैं। गुणोंमें क्षोभ होने पर मन द्वारा विविध प्रकारकी सृष्टि रचनाका संकल्प करते हैं। जो लोग नैष्कर्म्यता (कर्म त्याग) आदि द्वारा वेद शास्त्रोंसे से ऊपर उठ जाते हैं उनके आत्माके रूपमें आप स्वयं ही प्रकाशित हो जाते हैं। आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।16।।

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यगदृशे भगवते बृहते नमस्ते।। 17

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे जैसे शरणागत पशुके बंधनको काटने वाले नित्य मुक्त प्रचुर करुणा वाले, आलस्य रहित आपको नमस्कार है। आप अपने ही अंशसे सभी देह धारियोंके मनमें प्रतीत होते हैं ऐसे विस्तृत (अनन्त) भगवान आपको नमस्कार है।। ।17।।

आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तै-
र्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय।।18

जो लोग शरीर, पुत्र, गुरुजन, गृह, सम्पत्ति और स्वजनोंमे आसक्त हैं- उन्हें आपकी प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। क्योंकि आप स्वयं गुणोंकी आसक्तिसे रहित हैं। जीवन्मुक्त पुरुष अपने हृदयमें आपका निरन्तर चिन्तन करते रहते हैं। उन ईश्वरको, ज्ञानस्वरूप भगवान्‌को मैं नमस्कार करता हूँ।।18।।

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा
भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं
करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्।।19

धर्म, अर्थ काम और मोक्षकी कामनासे मनुष्य जिनका भजन करके अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त कर लेते हैं। इतना ही नहीं, वे उन भक्तोंको सभी प्रकारका सुख देते हैं और अपने ही जैसे अविनाशी पार्षद शरीर भी देते हैं। वे ही परम दयालु प्रभु मेरा उद्धार करें।।19।।

एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं
वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं
गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः। 20

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिनके भक्तजन एकान्त होकर, उनकी शरणमें जाकर कुछ भी इच्छा न रखते हुए भगवान की अद्भुत और मंगलमय चरित्र का गायन करते हुए आनन्दके समुद्रमें मग्न रहते हैं (उनकी मैं स्तुति करता हूँ)।।20।।

तमक्षरं ब्रह्म परं परेश-
मव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे।। 21

जो अक्षर, पर, परेश, अव्यक्त, आध्यात्मिक योगके ही द्वारा जाना-जाने वाले अतीन्द्रिय अत्यन्त निकट रहने पर भी अत्यंत दूर जान पड़ते हैं उन अनन्त, आदि, परिपूर्ण ब्रह्म की मैं स्तुति करता हूँ।।21।।

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नामरूपविभेदेन फल्व्या च कलया कृताः।। 22
यथार्चिषोऽग्नेः सर्वितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः।
तथा यतोऽयं गुणसंप्रवाहो
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः।।23
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्
निषेधशेषो जयतादशेषः।। 24

जिनकी अत्यन्त छोटी कलासे अनेक नाम रूपके भेद-भावसे युक्त ब्रह्मा आदि देवता, वेद और चराचर लोकोंकी सृष्टि हुई है, जैसे धधकती हुई आगसे लपटें और प्रकाशमान सूर्यसे उनकी किरणें बार-बार निकलती और लीन होती रहती हैं, वैसे ही जिन स्वयंप्रकाश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमात्मासे बुद्धि, मन, इन्द्रिय और शरीर, जो गुणोंके प्रवाहरूप हैं, बार-बार प्रकट होते तथा लीन हो जाते हैं, वे भगवान् न देवता है और न असुर। वे मनुष्य और पशु-पक्षी भी नहीं हैं। न वे स्त्री हैं, न पुरुष और न नपुंसक। वे कोई साधारण या असाधारण प्राणी भी नहीं हैं। न वे गुण हैं और न कर्म, न कार्य हैं और न तो कारण ही। सबका निषेध हो जानेपर जो कुछ बचा रहता है, वही उनका स्वरूप है तथा वे ही सब कुछ हैं। वे ही परमात्मा मेरे उद्धारके लिए प्रकट हों।।22-24।।

जिजीविषे नाहमिहामुया कि-
मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्।।25

मैं जीना नहीं चाहता। यह (हाथीकी) योनि बाहर और भीतर, सब ओरसे अज्ञानरूप आवरणके द्वारा ढँकी हुई है, इसको रखकर करना ही क्या है? मैं तो आत्मप्रकाशको ढँकनेवाले उस अज्ञान आवरणसे छूटना चहाता हूँ, जो कालक्रमसे अपने-आप नहीं छूट सकता, जो केवल भगवत्कृपा अथवा तत्त्वज्ञानके द्वारा ही नष्ट होता है।।25।।

सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मकानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम्।। 26

इसलिए मैं उन परब्रह्म परमात्माकी शरणमें हूँ जो विश्वरहित होनेपर भी विश्वके रचयिता और विश्वस्वरूप हैं। साथ ही जो विश्वकी अन्तरात्माके रूपमें रहते हैं, उन अजन्मा परमपदस्वरूप ब्रह्मको मैं नमस्कार करता हूँ।।26।।

योगरन्धितमकर्माणो हृदि योगविभाविते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्।।27

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगके द्वारा कर्मोंको भस्म कर हृदयमें योग से प्रकाशित करके योगीजन जिस योगीश भगवानको देखते हैं, उनको मैं नमस्कार करता हूँ। ।27 । ।

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग-
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ।। 28

तीन शक्तियों की असह्य वेग वाले आपको नमस्कार है। आप ही समस्त बुद्धिके गुणोंमें (वृत्तियोंमें) प्रकाशित होते हैं। आप शरणागत वत्सल हैं, आपकी शक्ति अनन्त है। जिनकी इन्द्रियाँ वशमें नहीं हैं वे आपकी प्राप्तिका मार्ग भी नहीं पा सकते हैं। ऐसे भगवानको मैं नमस्कार करता हूँ। ।28 । ।

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम्।
तं दुरत्यमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ।। 29

आपकी माया अहंबुद्धिसे आत्माका स्वरूप ढँक गया है, इसीसे यह जीव अपने स्वरूपको नहीं जान पाता। आपकी महिमा अपार है। उन सर्वशक्तिमान् एवं माधुर्यनिधि भगवान्की मैं शरणमें हूँ। ।29 । ।

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ।। 30

श्रीशुकदेवजी कहते हैं इस तरह गजेन्द्र द्वारा वर्णित निर्विशेष ईश्वर की स्तुति से ब्रह्मा आदि देवता उसकी रक्षा करनेके लिये नहीं आये। क्योंकि वे सब भिन्न भिन्न नाम और रूपको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपना स्वरूप मानते हैं। उस समय सभीके आत्मा और सभी देवताओं के स्वरूप होनेके कारण स्वयं भगवान् श्रीहरि प्रकट हो गये। ।30। ।

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सहसंस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः।। 31

उस गजेन्द्रको अत्यंत पीड़ित देखकर, उसकी स्तुति को सुनकर सम्पूर्ण जगतमें रहनेवाले विश्वके एकमात्र आधार भगवान् वेदमय गरुड़ पर बैठे हुए, चक्र आदि आयुध सहित, बड़ी शीघ्रता से वहाँ प्रगट हो गए। उनके साथ स्तुति करते हुए देवतागण भी आ गए। ।31। ।

सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवान् नमस्ते। ।32

सरोवरके भीतर अत्यंत बलवान् ग्राहसे पकड़ा हुआ और व्याकुल हाथी ने देखा कि आकाशमें गरुड़ पर सवार भगवान् चक्रको उठाये हुए आ रहे हैं। उस हाथी ने सरोवरसे एक सुन्दर कमलके पुष्पको सूंडमें ऊपर उठाया और अत्यंत कष्टसे बोला- नारायण! अखिलगुरो! भगवन्! आपको नमस्कार है। ।।32।।

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
संपश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्।। 33

उस हाथी को अत्यंत पीड़ित देखकर भगवान् एकाएक गरुड़ से उतर गये और ग्राहके साथ हाथीको कृपापूर्वक शीघ्रता से सरोवर से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाहर निकाल लिया। फिर सबके देखते-देखते ग्राह का मुख फाड़कर गजेन्द्र को छुड़ा लिया। ।33।।

इति श्री गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा।।"

चतुःश्लोकी भागवत् -4

जो आत्माका तत्त्व जानना चाहते हैं, "उनको यह नहीं है, यह नहीं है" इस प्रकार व्यतिरेक (निषेध) द्वारा और "यह भी है, यह भी है" इस प्रकार अन्वय (स्वीकृति) पद्धतिसे सिर्फ इनता ही जानना चाहिए कि जो सर्वत्र (सभी जगह है) और सर्वदा (सभी समय) है वही सत्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

चतुःश्लोकी भागवत परिचय

परमगुरु ब्रह्माजी अपने जन्मस्थान कमल पर बैठकर सृष्टि करने की इच्छा से विचार करने लगे, परन्तु जिस ज्ञान दृष्टि से सृष्टि का निर्माण हो सकता था और जो सृष्टि व्यापार के लिए वांछनीय है वह ज्ञान दृष्टि उन्हें प्राप्त नहीं हुई। एक दिन वे यही चिंता कर रहे थे कि प्रलय के समुद्र में उन्होंने व्यंजनों के सोलहवें और इक्कीसवें अक्षर "त" तथा "प" को, "तप तप" (तप करो) इस प्रकार दो बार सुना।

यह सुनकर ब्रह्माजीने वक्ता को देखने की इच्छा से चारों ओर देखा, परन्तु वहाँ कोई दूसरा दिखायी न पड़ा। वे अपने कमल पर बैठ गए तथा मुझे तप करने की प्रत्यक्ष आज्ञा मिली है, ऐसा निश्चय कर और उसी में अपना हित समझकर उन्होंने अपने मन को तपस्या में लगा दिया। उन्होंने एकाग्रचित्त से अपने मन, प्राण, कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को वश में करके ऐसी तपस्या की जिससे वे समस्त लोकों को प्रकाशित करने में समर्थ हो सकें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् नारायण ने उन्हें अपने लोक और स्वरूप का दर्शन कराया। भगवान् नारायण को ब्रह्माजी ने भलीभाँति अभिवादन किया। भगवान् ने ब्रह्माजी से कहा तुम्हारे हृदय में समस्त वेदों का ज्ञान विद्यमान है। तुम उस समय सृष्टि रचना कर्म करने में किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे। इसीसे मैंने तपस्या की आज्ञा दी। तुमने मुझे देखे बिना ही जलमें मेरी वाणी सुनकर इतनी घोर तपस्या की है। तपस्या मेरा हृदय है और मैं स्वयं तपस्या की आत्मा हूँ। मैं तपस्या से ही इस संसार की सृष्टि करता हूँ, तपस्या से ही इसका पालन पोषण करता हूँ और तपस्या से ही इसे अपने में लीन कर लेता हूँ। तपस्या मेरी एक दुर्लंघ्य शक्ति है। तुमने सृष्टि रचना की इच्छा से दीर्घकाल तक तपस्या करके मुझे भलीभाँति संतुष्ट कर दिया है। मन में कपट रखकर योगसाधना करनेवाले कभी मुझे सन्तुष्ट नहीं कर सकते। तुम्हारी जो अभिलाषा हो, वह मांग लो।

ब्रह्माजी ने भगवान् नारायण से ज्ञान की ही याचना की। उन्होंने प्रथम प्रार्थना यह की कि मैं आपके सगुण और निर्गुण दोनों ही रूपों को जान सकूँ। द्वितीय यह कि जैसे मकड़ी अपने मुँह से जाला निकाल कर फिर उसको अपने में ही लीन कर लेती है, उसी प्रकार से आप इस जगत् की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने के लिए अपने आप को ही अनेक रूपों में बना लेते हैं; ऐसा आप कैसे करते हैं, इस मर्मको मैं जान सकूँ, ऐसा ज्ञान दीजिये। तृतीय यह कि मैं सृष्टि रचना करते समय भी कर्त्तापन आदि के अभिमान से बँध न जाऊं।

भगवान् से इस प्रकार प्रार्थना करने पर नारायण ने चार श्लोकों में ब्रह्माजी को जो उपदेश दिया वह चतुःश्लोकी भागवत के नाम से प्रसिद्ध है। यह भागवत के द्वितीय स्कंध के नवें अध्याय के श्लोक संख्या 30 से 36 तक भगवान् के कहे 7 श्लोक हैं जिसमें प्रथम 2 प्रस्तावना है, बीच के 4 श्लोक मूल चतुःश्लोकी भागवत हैं और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तिम 1 श्लोक उपसंहार का है। आदिगुरू नारायण द्वारा उच्चारित होने के कारण स्तोत्र में सभी 7 श्लोक दिए जा रहे हैं।

इस स्तोत्र का फल अनंत अमोघ है। यह साक्षात् वेदांत है। जीवन के सभी दुखों से मुक्ति और सुख की प्राप्ति का साक्षात् साधन है। जो इसके अर्थ को ठीक ठीक समझ कर साक्षात् कर ले वह नारायण ही हो जाता है। ठीक ठीक समझ में न भी आये तो भी इसको समझने के प्रयास से भी अत्यंत लाभ है। जितना पुण्य फल इस वेदान्त विचार से होता है उतना किसी भी व्रत, तीर्थ, दान, अनुष्ठान, तप आदि से नहीं होता। पुण्य के बढ़ने से जीवन के लिए जो जो कल्याणकारी और शुभ है वह अपने आप प्रकट होने लगता है और जो अशुभ, दुर्गति, दुर्मति, कष्टकारक है वह सब खत्म होने लगता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चतुःश्लोकी भागवत

भगवान् नारायण के द्वारा चार श्लोकों में दिया गया उपदेश

श्रीभगवानुवाच

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद् विज्ञानसमन्वितम्
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया ।। 1

श्रीभगवानूने कहा जो ज्ञान परम गुप्त है उसे विज्ञान सहित, रहस्यके साथ, सभी अंगों सहित मैं तुम्हें कहता हूँ; तुम उसे ग्रहण करो।।30।।

यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात्।। 2

मेरा जितना विस्तार है, मेरा जैसा होना है, मेरा जैसा रूप, गुण और कर्म है, मेरी कृपासे वैसा ही तत्त्व का विज्ञान तुम्हें हो।।31।।

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्।।3

सृष्टि के पहले जब होना और नहीं होना दोनों ही नहीं था तब उसके परे मैं ही था। अभी जो कुछ भी है वह मैं ही हूँ। जब कुछ नहीं रहेगा तब जो बचेगा वह भी मैं ही हूँ।।32।।

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथा ऽऽभासो यथा तमः।।4

आत्मामें जो न होते हुए पता चलता है और होते हुए जो पता नहीं चलता है, उसको तुम मेरी माया समझो। जैसे आँख खराब होने पर आकाशमें दो चंद्रमा न होने पर भी दो चंद्रमा का आभास होता है और अन्तरिक्षमें दिनमें घरघोर अंधकार (तम) होने पर भी पता नहीं चलता है।।।33।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्।।5

जैसे पंचमहाभूत सभी प्राणियोंमें प्रविष्ट भी है और सभी जगह पंचमहाभूत ही होनेके कारण उसे प्रविष्ट होना नहीं ही माना जा सकता है उसी तरह सभीमें मैं ही हूँ और सभी जगह व्याप्त होने के कारण मैं उनमें नहीं भी हूँ।।34।।

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽत्मनः।
अन्वयवयतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा।।6

जो आत्माका तत्त्व जानना चाहते हैं, "उनको यह नहीं है, यह नहीं है" इस प्रकार व्यतिरेक (निषेध) द्वारा और "यह भी है, यह भी है" इस प्रकार अन्वय (स्वीकृति) पद्धतिसे सिर्फ इनता ही जानना चाहिए कि जो सर्वत्र (सभी जगह) है और सर्वदा (सभी समय) है वही सत्य है।।35।।

एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना।
भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्।।7

ब्रह्माजी! आप मेरे इस सिद्धान्तमें परम समाधि द्वारा अपने आपको अच्छी तरह स्थित कर लिजिए। इससे आप कल्प-विकल्पमें भी किसी प्रकार से विमोहित नहीं होंगे।।36।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय आध्यात्म के व्याख्यान की शैली में सिर्फ किसी एक व्यक्ति के अपने अनुभव को हीं महत्व नहीं दिया जाता बल्कि ऋषियों के अनुभव से अपने अनुभव को मिलाकर सत्य की अभिव्यक्ति की जाती है। इस शैली में जो प्रस्तुतिकरण एक पीढ़ी के लिये सरल, सहज होती है कुछेक पीढ़ी बाद वही शैली कठिन हो जाती है। ऐसे में इस तरह के प्रस्तुतिकरण और व्याख्यान की आवश्यकता है जो सहज, सरल भी हो साथ ही साथ ऋषियों के अनुभव का अनुशरण करता हो। इसी बात को ध्यान में रखते हुये एक प्रकाशन श्रृंखला शुरू की गयी है। प्रस्तुत पुस्तिका उसी श्रृंखला का एक अंग है।

- आदित्य आनन्द

ISBN-978-93-5279-736-3

मूल्य रू.100

प्रज्ञा ट्रस्ट

शिवाला, वाराणसी (उ.प्र.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi